पन्द्रह

ईश्वरीय चंगाई

Divine Healing

यद्यपि ईश्वरीय चंगाई का विषय कुछ विवादास्पद है, तौभी यह निश्चय ही वह नहीं है जो पवित्रशास्त्र में अस्पष्ट है। वास्तव में, चारों सुसमाचारों में लिखा गया दसवां भाग यीशु की चंगाई सेवकाई के संबन्ध में है। पुराने नियम, चारों सुसमाचारों और नये नियम की पत्रियों में ईश्वरीय चंगाई से संबन्धित प्रतिज्ञाएं पाई जाती हैं। रोगी लोग स्वास्थ्य के संबन्ध में विश्वास-निर्माण संबन्धी पदों के द्वारा प्रोत्साहित हो सकते हैं।

संसार के चारों ओर के प्रति मेरा सामान्य दृष्टिकोण यही रहा है कि जहां कलीसियाएं पूरी तरह से समर्पित विश्वासियों से भरी होती हैं, वहां ईश्वरीय चंगाई का होना सामान्य होता है। जहां कलीसियाएं गुनगुनी व कृत्रिम होती हैं वहां ईश्वरीय चंगाई बहुत कम ही होती हैं।[56] इस सबसे हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि यीशु ने हमसे कहा कि *विश्वासियों* का चिन्ह यह होगा कि वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और बीमार चंगे हो जाएंगे (देखें मर. 16:18)। यदि हम यीशु द्वारा विश्वासियों के लिए बताए गए चिन्ह को देखें, तो हम यह पाएंगे कि अधिकांश कलीसियाएं विश्वासियों से रहित हैं:

> और उसने (यीशु ने) उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई-नई भाषा

56. उत्तरी अमरीका की कुछ कलीसियाओं में, प्रभु के सेवक को इस विषय पर सिखाने के लिए तथाकथित विश्वासियों के भारी विरोध का सामना करना पड़ता है। यीशु ने भी अविश्वास और विरोध का सामना किया, जिसने उसकी चंगाई सेवकाई में बाधा उत्पन्न की (देखें मर. 6:1-6)।

> बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे'' (मर. 16:15-18)।

शिष्य निर्माता सेवक, मसीह की पूर्व सेवकाई की नकल करते हुए, ईश्वरीय चंगाई की सेवकाई को आगे बढ़ाने के लिए निश्चय ही अपने दान का प्रयोग करेगा। वह जानता है कि ईश्वरीय चंगाई दो तरीकों से परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाती है। सर्वप्रथम, चंगाई चमत्कार सुसमाचार के अद्‌भुत विज्ञापन हैं, जिन्हें सुसमाचार और प्रेरितों के काम पुस्तक को पढ़ने वाला कोई भी बच्चा समझ जाएगा (बल्कि बहुत से डिग्री प्राप्त सेवक भी इस तक पहुंच नहीं पाते हैं)। दूसरा, स्वस्थ शिष्य व्यक्तिगत बीमारी के कारण सेवकाई में बाधा नहीं आने देते हैं।

शिष्य निर्माता सेवक को मसीह की देह में उन सदस्यों के प्रति भावुक होने की ज़रूरत है जो चंगाई पाना चाहते हैं, लेकिन जिन्हें इसे प्राप्त करने में कठिनाई होती है। उन्हें प्राय: नम्र निर्देश और उदार प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है, विशेषकर जब किसी भी चंगाई उपदेश से उनकी दशा और भी बुरी हो गई हो। इस शिष्य निर्माता सेवक को एक चुनाव का सामना करना होता है : वह ईश्वरीय चंगाई के विषय पर शिक्षा से बच सकता है, जिसमें कोई भी चंगा नहीं होगा और न कोई नाराज़ होगा या फिर वह प्रेमपूर्वक विषय पर शिक्षा दे सकता है, कुछ को नाराज़ करने का खतरा उठाते हुए जबकि दूसरों को चंगाई का अनुभव प्राप्त करने में सहायता करते हुए। व्यक्तिगत रूप से मैंने दूसरे विकल्प को चुना है, यह विश्वास करते हुए कि यह यीशु के उदाहरणानुसार है।

क्रूस पर चंगाई
Healing on the Cross

ईश्वरीय चंगाई के अध्ययन का आरम्भ करने का एक अच्छा स्थान यशायाह का तिरेपनवाँ अध्याय है, जिसमें विश्वव्यापी रूप में मसीही भविष्यद्वाणी पर विचार किया गया है। पवित्र आत्मा के द्वारा, यशायाह यीशु की त्यागपूर्ण मृत्यु और उसके द्वारा क्रूस पर पूरा किये जाने वाले कार्य के बारे में बोला :

> निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया'' (यशा. 53:4-6)।

पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यशायाह ने घोषित किया कि यीशु ने हमारे *रोगों* और *दुखों* को उठा लिया। मूल इब्रानी का एक श्रेष्ठ अनुवाद संकेत देता है कि यीशु ने हमारी *बीमारियों* और दर्द को उठा लिया, जैसा कि बहुत से विश्वसनीय अनुवाद अपनी संदर्भ टिप्पणियों में सकेत देते हैं।

यशायाह 53:4 में अनुवादित रोग का अनुवाद इब्रानी के *चोली* शब्द से किया गया है, जो व्यवस्थाविवरण 7:15; 28:61; 1 राजा 17:17; 2 राजा 1:2; 8:8, और 2इतिहास 16:12; 21:15 में भी पाया जाता है। इन सभी में इसका अनुवाद या तो *बीमारी* या फिर *रोग* किया गया है।

अनुवादित *दुख* शब्द इब्रानी के *मकोब* शब्द से लिया गया है, जो अय्यूब 14-22 और 33:19 में भी पाया जा सकता है। दोनों ही में इसका अनुवाद दर्द में किया गया है।

इस तरह से, यशायाह 53:4 का अच्छी तरह से अनुवाद किया गया है, ''निश्चय उसने हमारे *रोगों* को सह लिया, और हमारे ही *दुखों* को उठा लिया।'' इस सच्चाई को मत्ती ने यशायाह 53:4 से अपने सुसमाचार में सीधा उद्धृत किया है : ''उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया'' (मत्ती 8:17)।

इन सच्चाइयों से बचने में असमर्थ होने पर कुछ हमें यह स्वीकार कराने का प्रयास करते हैं कि यशायाह हमारी ''अनुमानित आत्मिक रोगों'' और ''आत्मिक बीमारी'' का उल्लेख कर रहा था। तौभी, मत्ती का यशायाह 53:4 से लिया उद्धरण कोई संदेह नहीं छोड़ता कि यशायाह *शारीरिक* रोगों और बीमारियों के बारे में बोल रहा था।

आइये इसे संदर्भ के साथ पढ़ें :

> जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि *उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया* (मत्ती 8:16-17, पर बल दिया गया है)।

मत्ती ने केवल यही कहा कि यीशु द्वारा दी गई शारीरिक चंगाई यशायाह 53:4 की पूर्ति थी। अत: इसमें कोई संदेह नहीं कि यशायाह 53:4 मसीह द्वारा हमारे शारीरिक रोगों और दुखों को उठाने का उल्लेख है[57] *ठीक उसी तरह से जैसे* पवित्रशास्त्र कहता

57. उसी किसी भी चीज़ को पकड़ते हुए जिसके द्वारा वे अपने अविश्वास से जुड़े रह सकते हैं, कुछ हमें यह स्वीकार कराने का प्रयास, करते हैं कि उस शाम कफरनहूम में लोगों को चंगाई देने के द्वारा यीशु ने पूरी तरह से यशायाह 53:4 की पूर्ति की थी। लेकिन यशायाहने हमें बताया कि यीशु ने हमारे रोगों को उठा लिया, जिस तरह से उसने यह भी कहा कि यीशु हमारे अधर्म के लिए कुचला गया शा. (53:4 और 5 की तुलना करें)। यीशु ने उन्हीं लोगों के रोगों को उठा लिया था जिनके अधर्म के कारण वह कुचला गया था। अत: मत्ती केवल इस ओर संकेत दे रहा था कि कफरनहूम हमें यीशु की चंगाई र्सवकाई प्रमाणित करती है कि वह यशायाह 53 में बताया गया मसीहा था जो कि हमारे रोगों और अधर्म को उठाता है।

है कि यीशु ने हमारे अधर्म को उठा लिया (देखें यशा. 53:11) उसी तरह से यह ये भी कहता है कि उसने हमारे अधर्म और रोगों को *उठा लिया।* इस समाचार से प्रत्येक रोगी व्यक्ति को खुश हो जाना चाहिए। अपने अभिषिक्त बलिदान के द्वारा, यीशु ने हमारे लिए चंगाई *और* उद्धार को उपलब्ध कराया है।

एक पूछा गया प्रश्न
A Question Asked

कुछ का कहना है, लेकिन यदि यह सच है, तब हर कोई चंगा क्यों नहीं हो जाता है? इस प्रश्न का श्रेष्ठ जवाब एक दूसरे प्रश्न को पूछने के द्वारा दिया जा सकता है : सभी लोगों का नया जन्म क्यों नहीं होता है? सभी का नया जन्म इसलिए नहीं होता है क्योंकि या तो उन्होंने सुसमाचार को सुना नहीं है या फिर वे इस पर विश्वास नहीं करते। इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार चंगाई प्राप्त करता है। बहुतों ने इस अद्‌भुत सत्य को कभी सुना नहीं कि यीशु ने उनके रोगों को उठा लिया; दूसरों ने इसे सुना तो है परन्तु इसे अस्वीकार कर दिया है।

बीमारी के प्रति परमेश्वर पिता का रवैया उसके प्रिय पुत्र की सेवकाई से प्रगट हुआ है जो कि उसकी गवाही देता है,

> मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है (यूहन्ना 5:19)।

इब्रानियों की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि यीशु ''उसकी (परमेश्वर की) महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है'' (इब्रा. 1:3)। इस बारे में कोई प्रश्न नहीं है कि बीमारी के प्रति यीशु का रवैया उसके पिता के बीमारी के प्रति रवैये के समान ही था।

यीशु का रवैया क्या था? उसने कभी भी चंगाई प्राप्त करने के लिए आने वाले व्यक्ति को *वापस नहीं भेजा।* न ही उसने किसी चंगाई पाने वाले को कभी कहा, ''तुम्हारी चंगाई परमेश्वर की इच्छा में नहीं है, इसलिए तुम्हें बीमार ही रहना होगा।'' यीशु ने *हमेशा* उन बीमारों को चंगा किया जो उसके पास आए, उसने अक्सर उनसे कहा कि अपने विश्वास के कारण वे चंगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त, बाइबल बताती है कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं है (देखें मला. 3:6) और यह कि यीशु ''कल, आज और सर्वदा तक एकसा है'' (इब्रा. 13:8)।

चंगाई की घोषणा
Healing Proclaimed

दुर्भाग्यवश, उद्धार को आज पापों की क्षमा की तुलना में कुछ कम किया गया

है। लेकिन ''बचाया गया'' और ''उद्धार'' जैसे यूनानी अनुवादित शब्द न केवल क्षमा की धारणा को पूरा करते हैं, बल्कि छुटकारे और चंगाई की भी।[58] आइये बाइबल के एक व्यक्ति पर विचार करें जिसने इस पूर्ण भाव में उद्धार को अनुभव किया था। पौलुस द्वारा अपने शहर में सुसमाचार का प्रचार किये जाने पर वह अपने विश्वास से चंगा हुआ था।

> वे...लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आस-पास के देश में भाग गए। लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था : वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था। वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इस को चंगा हो जाने का विश्वास है और ऊंचे शब्द से कहा, ''अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो'' तब वह उछलकर चलने फिरने लगा (प्रेरित. 14:6-10)।

ध्यान दें कि यद्यपि पौलुस ''सुसमाचार'' का प्रचार कर रहा था, उस व्यक्ति ने ऐसा कुछ सुना जिसने उसके मन में शारीरिक चंगाई को प्राप्त करने का विश्वास उत्पन्न किया। उसने पौलुस द्वारा यीशु की चंगाई सेवकाई के साथ-साथ इस बारे में अपर्याप्त रूप से ही सुना होगा कि जिन लोगों ने विश्वास में होकर चंगाई मांगी यीशु ने उन्हें कैसे चंगा किया। शायद पौलुस ने हमारे दुखों और बीमारियों को यीशु द्वारा उठाए जाने के बारे में यशायाह द्वारा की जानेवाली भविष्यवाणी का भी वर्णन किया था। हम नहीं जानते, परन्तु चूंकि ''विश्वास सुनने से आता है '' (रोमि. 10:17)। लकवाग्रस्त व्यक्ति ने अवश्य ही कुछ ऐसा सुना होगा जिसने चंगाई पाने हेतु उसके हृदय में विश्वास की चिंगारी को जला दिया था। पौलुस द्वारा कही गई किसी चीज़ ने उसे यह स्वीकार करने को बाध्य किया कि परमेश्वर यह नहीं चाहता कि वह इस लगवाग्रस्त स्थिति में रहे।

पौलुस ने स्वयं भी यह विश्वास किया था कि परमेश्वर उस व्यक्ति को चंगा करना चाहता है, नहीं तो उसके शब्द कभी भी उस व्यक्ति को अपनी चंगाई के लिए विश्वास करने को बाध्य नहीं कर पाते, न ही उसने उस व्यक्ति को खड़े होने के लिए कहा होता। यदि पौलुस ने आज के आधुनिक प्रचारकों के समान कहा होता तो क्या हुआ होता? अथवा यदि उसने यह प्रचार किया होता, ''प्रत्येक की चंगाई परमेश्वर की इच्छा में नहीं है?'' उस व्यक्ति में चंगाई पाने का विश्वास न आया होता। शायद

58. उदाहरण के लिए, यीशु ने लहू बहने की बीमारी से पीड़ित स्त्री को चंगा करने के बाद उससे कहा, ''बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है'' (मर. 5:34)। इस पद में ''चंगा'' होने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह यूनानी के सोज़ो' शब्द से अनुवादित है और नये नियम में दस बार उद्धार के रूप में अनुवादित हुआ है तथा नये नियम में अस्सी से भी अधिक बार ''उद्धार करना'' में यह इफिसियों 2:5 में ''बचाया गया'' का वही अनुवादित शब्द है, अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हआ है।'' अत: हम देखते हैं कि शारीरिक चंगाई उस यूनानी शब्द के अर्थ से संबन्धित है जिसका अधिकांश समय अनुवाद ''उद्धार'' से किया जाता है।

यह इस बात को बताता है कि आज अधिकांश लोग चंगे क्यों नहीं होते हैं। जिन प्रचारकों को लोगों को विश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाहिए, वे ही उनके विश्वास का नाश कर रहे हैं।

पुन:, ध्यान दें कि यह व्यक्ति *अपने* विश्वास से चंगा हुआ था। यदि उसने विश्वास न किया होता तो वह लकवे की अवस्था में ही रहता, जबकि उसकी चंगाई परमेश्वर की इच्छा में थी। इसके अतिरिक्त, उस दिन भीड़ में और भी बीमार लोग थे, लेकिन किसी और के भी चंगाई पाने का विवरण नहीं मिलता है। यदि ऐसा था, तो वे चंगे क्यों नहीं हुए थे? इसका केवल यही कारण था कि उस दिन भीड़ में नया जन्म पाए हुए लोग नहीं थे क्योंकि उन्होंने पौलुस के संदेश पर विश्वास नहीं किया था।

हमें इस आधार पर कभी यह परिणाम नहीं निकालना चाहिए कि कुछ लोग कभी भी इस कारण चंगे नहीं होते हैं कि उनकी चंगाई परमेश्वर की इच्छा में नहीं होती है। यह इसी तरह का परिणाम निकालने के समान होगा कि परमेश्वर की इच्छा में नहीं है कि सभी नया जन्म पाएं, क्योंकि कुछ लोगों का कभी भी नया जन्म नहीं होता है। उद्धार पाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए, चंगाई पाने के लिए भी प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं विश्वास करना चाहिए।

चंगाई पाने के लिए परमेश्वर की इच्छा का अतिरिक्त प्रमाण

Further Proof of God's Will to Heal

पुरानी वाचा के अन्तर्गत, शारीरिक चंगाई परमेश्वर की इस्राएल के साथ बांधी गई वाचा के साथ जुड़ी थी। निर्गमन के कुछ दिनों के पश्चात् ही, परमेश्वर ने इस्राएल से यह प्रतिज्ञा की थी :

> यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजे हैं उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं (निर्ग. 15:26)।

प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति इस बात से सहमत होगा कि चंगाई परमेश्वर की इस्राएल से की गई वाचा के साथ जुड़ी थी जो लोगों की आज्ञाकारिता पर निर्भर थी (संयोगवश, पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:27-31 में इसे स्पष्ट करता है कि नई वाचा के अन्तर्गत शारीरिक चंगाई भी हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर है।)।

> परमेश्वर ने इस्राएलियों से यह भी प्रतिज्ञा की : और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर

> आशीष देगा, और *तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।* तेरे देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न कोई बांझ होगी; और तेरी आयु मैं पूरी करूंगा (निर्ग. 23:25-26, पर बल दिया गया है)।
>
> तू सब देशों के लोगों से अधिक धन्य होगा, तेरे बीच में न पुरुष न स्त्री निर्वंश होगी, और तेरे पशुओं में भी ऐसा कोई न होगा। और *यहोवा तुझ से सब प्रकार के रोग दूर करेगा* और मिस्र की बुरी बुरी व्याधियाँ जिन्हें तू जानता है उनमें से किसी को भी तुझे लगने न देगा, ये सब तेरे बैरियों को ही लगेंगे (व्यवस्था. 7:14-15, पर बल दिया गया है)।

यदि शारीरिक चंगाई को पुरानी वाचा में जोड़ा गया था, तो किसी को भी यह हैरानी हो सकती है कि इसे नई वाचा में शामिल क्यों नहीं किया जा सकता, वास्तव में यदि नई वाचा पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है जैसा पवित्रशास्त्र कहता है :

> पर उसको (यीशु को) उन की सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह *और भी उत्तम वाचा* का मध्यस्थ ठहरा, *जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है* (इब्रा. 8:6, पर बल दिया गया है)।

और भी अतिरिक्त प्रमाण

Yet Further Proof

बाइबल में ऐसे बहुत से पद पाए जाते हैं जो ऐसे निर्विवाद प्रमाण देते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक को चंगा करना चाहता है। मैं उनमें से तीन की सूची आपको देता हूं :

> हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है; वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, *और तेरे सब रोगों को चंगा करता है* (भजन. 103:1-3, पर बल दिया गया है)।

मसीही दाऊद की इस घोषणा पर क्या विवाद करेंगे कि परमेश्वर की इच्छा हमारे *सब* अधर्म को क्षमा करने की है? तथापि, दाऊद ने विश्वास किया कि उसी तरह से परमेश्वर की इच्छा हमारी बहुत सी बीमारियों को चंगा करने की है - सभी को।

> हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान करके सुन, और अपना कान मेरी बातों पर लगा। इनको अपनी आंखों की ओट न होने दें; वरन् अपने मन में धारण कर। क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती है, वे उनके जीवित रहने का और *उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं* (नीति. 4:20-22, पर बल दिया गया है)।

> यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। *और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा* और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उसने पाप भी किये हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी (याकू. 5:14-15, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि यह अंतिम प्रतिज्ञा *प्रत्येक बीमार व्यक्ति* के लिए है और इस पर भी ध्यान दें कि प्राचीनों और अभिषिक्त तेल के द्वारा नहीं बल्कि ''विश्वास की प्रार्थना'' से चंगाई मिलती है।

क्या यह प्राचीनों या बीमार व्यक्ति का विश्वास है? यह दोनों का विश्वास है। बीमार व्यक्ति के विश्वास को कम से कम आंशिक रूप में व्यक्त किया गया है, प्राचीनों को बुलाने के द्वारा बीमार व्यक्ति का अविश्वास प्राचीनों की प्रार्थना के प्रभाव को कम कर सकता था। जिस तरह की प्रार्थना के बारे में याकूब ने लिखा वह यीशु द्वारा मत्ती में वर्णित 18:19 ''सहमति की प्रार्थना'' का एक अच्छा उदाहरण है। दोनों ही दलों को इस तरह की प्रार्थना में सहमत रहना चाहिए। यदि एक व्यक्ति विश्वास करता है और दूसरा व्यक्ति विश्वास नहीं करता है तो वे दोनों सहमति में नहीं हैं।

हम यह भी जानते हैं कि बाइबल के अधिकांश परिच्छेदों में बीमारी का श्रेय शैतान को दिया गया है (देखें अय्यूब 2:7; लूका 13:16; प्रेरित. 10:38; 1 कुरि. 5:5)। अत: परमेश्वर अपनी संतान के शरीरों में शैतान के कार्य का निश्चय ही विरोध करेगा। हमारा पिता किसी भी दुनियावी पिता से अधिक हम से प्रेम करता है (देखें मत्ती 7:11) और मैं कभी भी ऐसे पिता से नहीं मिला जो अपनी संतान को रोगी देखना चाहता हो।

यीशु की पृथ्वी पर की गई सेवकाई में उसके द्वारा की जाने वाली कोई भी चंगाई और प्रेरितों के काम में वर्णित प्रत्येक चंगाई हमें यह विश्वास करने को प्रेरित करने वाली होनी चाहिए कि परमेश्वर हमें स्वस्थ रखना चाहता है। जो लोग यीशु के पास चंगाई के लिए आए, उसने उन्हें बार-बार चंगा किया, और उसने उनके चमत्कार का श्रेय उनके विश्वास को दिया। यह प्रमाणित करता है कि यीशु कुछ विशिष्ट लोगों को ही चंगाई देना नहीं चाहता था। कोई भी बीमार व्यक्ति उसके पास विश्वास से आकर चंगाई प्राप्त कर सकता था। वह उन सभी को चंगा करना चाहता था, लेकिन इसके लिए उसे उनके विश्वास की ज़रूरत थी।

कुछ सामान्य विरोधों के जवाब

Answers to Some Common Objections

शायद उन सबमें सबसे सामान्य विरोध वह है जो परमेश्वर के वचन पर आधारित

नहीं है, बल्कि लोगों के अनुभवों पर। यह कुछ इस तरह का है : ''मैं एक ऐसी अद्‌भुत मसीही स्त्री को जानता था जिसने कैंसर से चंगाई पाने के लिए प्रार्थना की थी, तौभी वह मर गई। यह प्रमाणित करता है कि उसकी चंगाई परमेश्वर की योजना में नहीं थी।''

हमें परमेश्वर की इच्छा को कभी भी उसके वचन के अतिरिक्त और किसी चीज़ के द्वारा निर्धारित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आप पिछले समय में जाकर इस्राएलियों को 40 साल तक जंगल में भटकते हुए देख पाते जबकि वे दूध और मधु बहने वाले देश से कुछ ही दूरी पर थे, केवल यर्दन नदी को पार करने की, तो आपको यह परिणाम निकालना चाहिए कि यह परमेश्वर की इच्छा में नहीं था कि वे प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश कर पाते। लेकिन यदि आप बाइबल को जानते हैं, तो आप जानते हैं कि बात ऐसी नहीं थी। निश्चय ही परमेश्वर की इच्छा में *था* कि इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करें, लेकिन वे अपने अविश्वास के कारण प्रवेश नहीं कर पाए थे (देखें इब्रा. 3:19)।

उन लोगों के बारे में क्या जो इस समय नरक में हैं? यह परमेश्वर की इच्छा में था कि वे स्वर्ग में रहें, लेकिन उन्होंने पश्चात्ताप करने और प्रभु यीशु पर विश्वास करने की अनिवार्यता को पूरा नहीं किया था। इसी तरह से हम बीमार लोगों की ओर देखकर परमेश्वर की इच्छा का निर्धारण नहीं कर सकते हैं। एक मसीही के प्रार्थना करने और चंगाई प्राप्त न कर पाने पर यह प्रमाणित नहीं होता कि परमेश्वर की इच्छा में उसके लिए चंगाई नहीं है। यदि उस मसीही ने परमेश्वर की मांगों को पूरा किया होता, तो वह चंगा हो गया होता, नहीं तो फिर परमेश्वर झूठा है। चंगाई प्राप्त करने में असफल हो जाने के बाद परमेश्वर को हम यह दोष देते हैं कि चंगाई उसकी इच्छा में नहीं थी, तब ऐसी अवस्था में हम उन अविश्वासी इस्राएलियों से भिन्न नहीं होते हैं जो जंगल में यह दावा करते हुए मर गए कि यह परमेश्वर की इच्छा में नहीं था कि वे प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश करें। हमें अपने घमण्ड को निगलकर यह स्वीकार करना होगा कि दोषी हम हैं।

जैसा मैंने पिछले अध्यायों में विश्वास के बारे में बताया, अधिकांश निष्कपट मसीही चंगाई के लिए की गई अपनी प्रार्थनाओं का अन्त इस विश्वास का नाश करने वाले वाक्यांश से करते हैं, ''यदि यह तेरी इच्छा में है।'' यह प्रगट करता है कि वे विश्वास में होकर प्रार्थना नहीं कर रहे हैं क्योंकि वे परमेश्वर की इच्छा के प्रति आश्वस्त नहीं हैं। चंगाई के विषय में परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट है, जैसा हम पहले भी देख चुके हैं। यदि आप जानते हैं कि परमेश्वर आपको चंगा करना चाहता है तो आपको अपनी चंगाई की प्रार्थनाओं में ''यदि तेरी इच्छा हो'' जोड़ने की ज़रूरत नहीं है। यह परमेश्वर से ये कहने के समान होगा, ''प्रभु, मैं जानता हूं कि आपने मुझे चंगाई देने की प्रतिज्ञा की है लेकिन यदि आप इसके बारे में

झूठ बोल रहे थे, तो मैं आपसे केवल यही कहूंगा कि यदि सच में आपकी इच्छा में मुझे चंगाई देना है तो चंगा करो।''

यह भी सत्य है कि संभव है परमेश्वर अनाज्ञाकारी विश्वासियों को अनुशासित करने के लिए उन्हें बीमारी में रहने दे, यहां तक कि कुछ मामलों में उनकी समय से पहले मृत्यु भी होने दे। इस तरह के विश्वासियों को चंगाई प्राप्त करने से पहले पश्चात्ताप करने की ज़रूरत होती है (देखें 1 कुरि. 11:27-32)। कुछ ऐसे भी हैं जो अपने शरीरों की परवाह न करते हुए उन्हें बीमारी के लिये खोलते हैं। मसीहियों को स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन खाना चाहिए, नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए और आवश्यक विश्राम करना चाहिए।

एक दूसरा सामान्य विरोध
A Second Common Objection

प्राय: कहा जाता है, ''पौलुस की देह में एक कांटा था और परमेश्वर ने उसे चंगा नहीं किया।''

यह विचार करना कि वह कांटा बीमारी था उस सच्चाई की रोशनी में गलत विचार था जो पौलुस ने हमें बताया था कि उसका कांटा वास्तव में क्या था- शैतान का एक दूत :

> और इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया अर्थात शैतान का एक दूत कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन बार विनती की, कि मुझ से यह दूर हो जाए। और उसने मुझसे कहा, ''मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है,'' इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे (2 कुरि. 12:7-9, पर बल दिया गया है)।

अनुवादित किया गया दूत शब्द यूनानी भाषा का ''एगिलोस'' है जिसका 160 से भी अधिक स्थानों में दूत या दूतों के रूप में अनुवाद किया गया, है जो नये नियम में पाया जाता है। पौलुस की देह का कांटा शैतान का एक दूत था जिसने पौलुस को घूसे मारने के लिए भेजा गया था, वह कोई बीमारी या रोग नहीं था।

इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस द्वारा इससे चंगाई पाने हेतु प्रार्थना का वर्णन नहीं मिलता है और न ही ऐसा कोई संकेत मिलता है कि परमेश्वर ने उसे चंगा करने से मना कर दिया था। तीन अवसरों पर पौलुस ने केवल परमेश्वर से उसे घूसे मारने वाले दूत को हटाने के लिए कहा था और परमेश्वर का जवाब था कि उसका अनुग्रह पर्याप्त था।

पौलुस को यह कांटा किसने दिया था? कुछ का मानना है कि शैतान ने, क्योंकि कांटे को ''शैतान का दूत'' कहा गया है। अन्यों का मानना है कि यह परमेश्वर ने किया था, क्योंकि यह कांटा इसलिए दिया गया था ताकि पौलुस घमण्ड से फूल न जाए। पौलुस ने स्वयं कहा, ''मुझे घमण्ड करने से बचाने के लिये।''

किंग जेम्स संस्करण में इन पदों को भिन्न तरह से अनुवादित किया गया है। यह कहने के बजाय ''मुझे घमण्ड करने से बचाने के लिये'' यह कहता है, ''मैं कुछ कम ऊंचा उठाया जाऊं।'' यह एक महत्वपूर्ण भिन्नता है क्योंकि परमेश्वर हमारे ऊंचे उठाए जाने का विरोध नहीं करता है। वास्तव में, यदि हम स्वयं को दीन करते हैं तो वह हमें ऊंचा उठाता है। अत: स्पष्ट है कि परमेश्वर पौलुस को ऊंचा उठा रहा था जबकि शैतान का दूत उसे ऊंचा होने से रोक रहा था। तौभी, परमेश्वर ने कहा कि वह परिस्थितियों का प्रयोग अपनी महिमा के लिये करेगा क्योंकि उसकी सामर्थ पौलुस के जीवन में उसकी दुर्बलता में प्रगट होगी।

अत:, यह कहना कि पौलुस रोगी था और परमेश्वर ने उसे चंगा करने से इंकार कर दिया था जो बाइबल कहती है उसका विकृत रूप है। उसकी देह के कांटे वाले परिच्छेद में, पौलुस ने परमेश्वर से कभी किसी बीमारी का वर्णन नहीं किया और न इस बात का कोई प्रतिरूप मिलता है कि परमेश्वर ने उसे चंगा करने से इंकार कर दिया था। यदि कोई भी समझदार व्यक्ति 2 कुरिन्थियों 11:23-30 में पौलुस द्वारा सूचीगत परीक्षाओं के बारे में पढ़े तो वह एक बार भी किसी रोग या बीमारी का वर्णन नहीं पाएगा।

इसी विषय पर एक विस्तार

An Elaboration on the Same Theme

कुछ पौलुस के कांटे के संबन्ध में की गई मेरी व्याख्या का विरोध यह कहते हुए करते हैं, ''लेकिन क्या पौलुस ने स्वयं गलातियों से यह नहीं कहा कि पहली बार जब उसने उनमें सुसमाचार का प्रचार किया था तब वह बीमार था? क्या वह अपनी देह के कांटे के बारे में नहीं बोल रहा था?'' पौलुस ने गलातियों को अपने पत्र में वास्तव में जो लिखा वह यह है:

> पर तुम जानते हो कि पहले पहल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की; और परमेश्वर के दूत वरन मसीह के समान मुझे ग्रहण किया (गल. 4:13-14)।

गलातियों में *निर्बलता* के लिए जिस यूनानी शब्द का अनुवाद हुआ है वह *अस्थेनिया* है जिसका अक्षरश: अर्थ ''दुर्बलता'' है। इसका अर्थ बीमारी के कारण होने वाली दुर्बलता हो *सकती* है।

उदाहरण के लिए, पौलुस ने लिखा, ''परमेश्वर की *निर्बलता* मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है'' (1कुरि. 1:25, पर बल दिया गया है)। यहां जिस शब्द का अनुवाद *निर्बलता* किया गया है वह भी *अस्थेनिया* है। यदि अनुवादक इस तरह से अनुवाद करता तो इसका कोई अर्थ न होता, ''परमेश्वर की बीमारी मनुष्यों से बहुत बलवान है।'' (मत्ती 26:41 और 1 पत. 3:7 भी देखें; जहां *अस्थेनिया* शब्द का अनुवाद *निर्बलता* किया गया है जिसके लिए *''बीमारी''* अनुवाद किया जाना संभव नहीं है)।

जैसा प्रेरितों के काम की पुस्तक में बताया गया है कि जब पौलुस पहली बार गलातिया गया, वहां उसके बीमार होने का कोई वर्णन नहीं मिलता है। तथापि, वहां उस पर पत्थरवाह किये जाने और मृत्यु के लिए छोड़ कर चले जाने का विवरण मिलता है और वह मृतको में से जी उठा था या फिर चमत्कारिक रूप से जीवित हो गया था (देखें प्रेरित. 14:5-7, 19-20)। निश्चय ही पत्थरवाह किये जाने और मृत्यु के लिये छोड़ दिये जाने के बाद पौलुस की देह बहुत ही भयंकर दशा में होगी अर्थात् पूरी देह पर कटने और खरोंचों के निशान होंगे।

पौलुस को गलातिया में कोई बीमारी नहीं थी, यह उसके श्रोताओं के लिए एक परीक्षा थी। उसकी देह तो पत्थरवाह किये जाने के बाद निर्बल अवश्य हो गई थी। संभव है कि गलतियों में हुए सताव की उसके पास अभी भी स्मृति थी जब उसने गलातियां की कलीसिया को लिखा था, क्योंकि उसने अपनी पत्री का अन्त इन शब्दों से किया था :

> आगे को कोई मुझे दुख न दे क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं (गल. 6:17)।

अन्य विरोध : ''मैं परमेश्वर की महिमा के लिये दुख उठा रहा हूं''

Another Objection: "I'm Suffering for the Glory of God"

इस विरोध का प्रयोग उनके द्वारा किया गया जिन्होंने लाज़र की कहानी से एक पद का प्रयोग अपने इस दावे के लिए किया था कि वे परमेश्वर की महिमा के लिए बीमारी को सह रहे हैं। यीशु ने लाज़र के संबन्ध में कहा था :

> ''यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो'' (यूहन्ना 11:4)।

यीशु यह नहीं कह रहा था कि लाज़र की बीमारी से परमेश्वर को महिमा मिली थी, बल्कि यह कि लाज़र के चंगा होने और मृतकों में से जी उठने पर परमेश्वर को महिमा मिलेगी। अन्य शब्दों में, बीमारी का अन्तिम परिणाम मृत्यु होगा, बल्कि

इसके विपरीत यह कि परमेश्वर को महिमा मिलेगी। परमेश्वर को बीमारी में महिमा नहीं मिलती; उसे चंगाई में महिमा मिलती है (मत्ती 9:8; 15:31; लूका 7:16; 13:13 और 17:15 भी देखें, जहां चंगाई परमेश्वर की महिमा को लाई)।

अन्य विरोध:''पौलुस ने कहा कि उसने त्रुफिमुस को मिले तुम में बीमार छोड़ दिया था''

Another Objection: "Paul Said He Left Trophimus Sick at Miletum"

मैं इस वाक्य को जर्मनी के एक शहर में से लिख रहा हूं। पिछले सप्ताह जब मैं युनाइटेड स्टेट्स के अपने गृहनगर से अलग हुआ, तब मैंने अपने पीछे असंख्य बीमार लोगों को छोड़ दिया था। मैं ने बीमार लोगों से भरे *अस्पतालों* को अपने पीछे छोड़ दिया था। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उन सभी के चंगा होने के लिए परमेश्वर की योजना नहीं थी। सिर्फ इस कारण से कि पौलुस ने शहर में एक व्यक्ति को बीमार छोड़ दिया था, यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर की इच्छा उस व्यक्ति के चंगा होने के लिए नहीं थी। उन बचाए न गए लोगों के बारे में क्या है जिन्हें पौलुस अपने पीछे छोड़ गया था? क्या यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि वे बचाए जाएं? ऐसा नहीं है।

अन्य विरोध : ''मैं अय्यूब के समान हूं!''

Another Objection: "I'm Just Like Job!"

प्रभु की स्तुति हो! यदि आपने अय्यूब की कहानी के अन्त को पढ़ा है, तो आप जानते होंगे कि अन्त में वह चंगा हो गया था। परमेश्वर की इच्छा में नहीं था कि अय्यूब बीमारी की अवस्था में ही रहे, और न परमेश्वर की आपके लिये यह इच्छा है कि आप बीमार रहें। अय्यूब की कहानी इस बात की पुष्टि करती है कि परमेश्वर की इच्छा सदैव चंगा करने की होती है।

अन्य विरोध : पौलुस की तीमुथियुस को उसके पेट के बारे में सलाह

Another Objection: Paul's Advice to Timothy About His Stomach

हम जानते हैं कि पौलुस ने तीमुथियुस को कहा था कि अपने पेट और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस काम में लाया कर (देखें 1 तीमु. 5:23)।

वास्तव में, पौलुस ने तीमुथियुस को उसके पेट और उसके बार बार बीमार होने के कारण *पानी पीना बन्द करके* थोड़ा दाखरस काम में लाने को कहा था। ऐसा लगता है कि पानी में कुछ खराबी होगी। बेशक, यदि आप दूषित पानी पी रहे हों तो आपको इसे पीना बन्द करके कुछ और पीना आरम्भ करना चाहिए, नहीं तो आपको भी तीमुथियुस के समान पेट की समस्या रहेगी।

अन्य विरोध : ''यीशु ने अपनी ईश्वरीयता को प्रमाणित करने के लिए चंगाई दी थी''

Another Objection: "Jesus Only Healed to Prove His Deity."

कुछ लोग हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यीशु द्वारा चंगाई देने का एकमात्र कारण अपनी ईश्वरीयता को प्रमाणित करना था। उसकी ईश्वरीयता के स्थापित हो जाने के बाद वह चंगाई नहीं देता है।

यह पूर्णतया गलत है। यह सत्य है कि यीशु के चमत्कारों ने उसकी ईश्वरीयता को स्थापित किया, लेकिन उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई के समय में लोगों को चंगाई दिये जाने का एकमात्र कारण यही नहीं था। अधिकांश बार यीशु ने लोगों को दूसरों को वह बताने के लिए मना कर दिया था जो उसने उनके लिये किया था (देखें मत्ती 8:4; 9:6,30; 12:13-16; मर. 5:43; 7:36; 8:26)। यदि यीशु ने अपनी ईश्वरीयता को प्रमाणित करने के एकमात्र कारण से लोगों को चंगाई दी थी, तो उसने उन लोगों को उस कि बारे में प्रत्येक को बताने को कहा होता जो उसने उनके लिये किया था।

यीशु की चंगाई के पीछे की प्रेरणा क्या थी? अधिकांश समय पवित्रशास्त्र कहता है कि ''करुणा से भरे जाने पर'' उसने लोगों को चंगा किया था (देखें मत्ती 9:35-36; 14:14; 20:34; मर. 1:41; 5:19; लूका 7:13)। यीशु के चंगाई देने का कारण उसका करुणा से भरपूर होना और लोगों से प्रेम करना था। क्या अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के समय में यीशु कम करुणा करने वाला हो गया था? क्या उसका प्रेम हल्का पड़ गया था? बिल्कुल नहीं!

अन्य विरोध : ''परमेश्वर कुछ कारणों से मुझे रोगी अवस्था में रहने देना चाहता है''

Another Objection: "God Wants Me to be Sick for Some Reason."

जितने भी पवित्रशास्त्रीय पदों पर हमने विचार किया है उसकी रोशनी में यह असंभव है। यदि आप अनाज्ञाकारिता में हैं, तो यह सत्य हो सकता है कि परमेश्वर

ने आपको पश्चात्ताप कराने के लिए बीमारी की अवस्था में रखा हो। लेकिन यह अभी भी उसकी इच्छा में नहीं है कि आप बीमारी में रहें। वह चाहता है कि आप पश्चात्ताप करें और चंगे हों।

इसके अतिरिक्त, यदि परमेश्वर आपको बीमारी में रखना चाहता है तो आप चंगाई पाने की आशा में डॉक्टर के पास जाकर दवा क्यों लेते हैं, क्या आप ''परमेश्वर की इच्छा'' से बाहर निकलने का प्रयास कर रहे हैं?

एक अन्तिम विरोध : ''यदि हम कभी बीमारी का सामना न करें तो हम कैसे मरेंगे?''

A Final Objection: "If We Never Suffer Disease, How Will We Die?"

हम जानते हैं कि बाइबल सिखाती है कि हमारी शारीरिक देह सड़ रही है (देखें 2 कुरि. 4:16)। हम अपने बालों को सफेद होने और अपनी देहों को बढ़ने से नहीं रोक सकते हैं। इसी तरह से हमारी दृष्टि और कान उतने अच्छी तरह से कार्य नहीं करते जितना जवानी में किया करते थे। हम ज्यादा तेज़ दौड़ नहीं सकते। हमारे हृदय पहले के समान मज़बूत नहीं होते। हम धीरे-धीरे थकने लगते हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हमें बीमारी या रोगों में मरना है। हमारी देह पूरी तरह से समाप्त हो सकती है, और ऐसा करने पर हमारी आत्मा हमारी देह को छोड़ देगी है और परमेश्वर हमें स्वर्ग में बुला लेगा। अधिकांश विश्वासी इसी तरह से मरे हैं। आप क्यों नहीं?